University in News on 23 September 2023

AMRIT VICHAR PAGE 4

लविवि में बाहरी लोगों के प्रवेश पर रोक

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के द्वितीय परिसर में शुक्रवार को बाहरी लोगों के मिलने पर उनको परिसर से बाहर किया गया। साथ ही सुरक्षा कर्मियों को हिदायत दी गई कि आईडी देखने के बाद ही प्रवेश दें। परिसर में संचालित कैंटीन और पेयजल व्यवस्था भी देखी गई। परिसर में खुदरा मूल्य से अधिक दामों पर बेची जा रही वस्तुओं की बिक्री पर रोक लगा दी। निरीक्षण करने वालों में एडिशनल डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ. अभिषेक कुमार तिवारी, डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव, जीशान अली सिद्दीकी, डॉ. पल्लवी ठक्कर, संदीप कुमार गुप्ता, प्रशांत कुमार सिंह और मोहम्मद तल्हा सिद्दिकी थे। टीम ने मौके पर उपस्थित छात्र-छात्राओं से बात कर उनकी परेशानियां सुनीं और उसका निस्तारण किया।

सृष्टि और अश्मिता ने मारी बाजी

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय खगोल दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। भाषण प्रतियोगिता में छात्रों ने खगोल विज्ञान की उत्पत्ति और इतिहास के बारे में बताया, फिर प्राचीन खगोलविदों के बारे में एक संक्षिप्त विवरण देते हुए बताया कि कैसे अंतरिक्ष और इसकी खोज के बारे में विभिन्न सिद्धांतों को मान्यता दी गई। विजेताओं में सृष्टि दुबे को प्रथम, सुधांशु वर्मा को द्वितीय और अनुष्का मिश्रा को तृतीय स्थान मिला। एक्सटेम्पोर प्रतियोगिता में अश्मिता सक्सेना ने पहला और शुभम सिंह ने दूसरा स्थान हासिल किया। क्विज प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं को छह अलग-अलग टीमों के समूह में विभाजित किया गया था। पोस्टर मेकिंग और स्लोगन लेखन प्रतियोगिता की शुरुआत हुई। स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में अश्मिता सक्सेना ने प्रथम, अवंतिका शुक्ला और अंकिता चौधरी ने द्वितीय और अनुष्का श्रीवास्तव, अंकित कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सत्र के समापन में डॉ. अलका मिश्रा, प्रो. अमृतांशु शुक्ला, प्रो. विवेक कुमार, प्रो. सत्येन्द्र पाल सिंह, एनएसएस समन्वयक प्रो. रूपेश कुमार और डॉ. नीरज चौबे आदि मौजूद रहे।

सार्क देशों से एमओयू करेगा लखनऊ विश्वविद्यालय

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय छात्रों को अंतरराष्ट्रीय अनुभव देने के लिए सार्क दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) देशों के साथ मजबूत शैक्षणिक और अनुसंधान संबंधों को बढ़ावा देने की योजना बना रहा है। वृद्धि और विकास की संभावनाओं को देखते हुए लविवि ने सार्क सदस्य देशों के विश्वविद्यालयों और संस्थानों के साथ सहयोग और साझेदारी शुरू की है। लविवि ने नेपाल में कई उच्च शिक्षा संस्थानों और विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। भूटान और बांग्लादेश के विश्वविद्यालयों से पहली ही करार हो चुका है। लखनऊ विश्वविद्यालय और सार्क देशों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों में शैक्षणिक और अनुसंधान विषयों की श्रृंखला शामिल है। जिसमें छात्र और संकाय विनिमय कार्यक्रम, ट्विनिंग, दोहरी और संयुक्त डिग्री, संयुक्त अनुसंधान पहल, संयुक्त सम्मेलन और सेमिनार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को रखा गया है।

परीक्षण करने के बाद करें तथ्यों पर विश्वास

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति आलोक कुमार राय ने कहा कि किसी भी पुस्तक को पढ़कर उसका परीक्षण करना चाहिए और उसके बाद तथ्यों पर विश्ववास करना चाहिए। उन्होंने उक्त बात शुक्रवार को लविवि के एपी सेन हाल में प्रो. शैलेन्द्र नाथ कपूर द्वारा लिखित पुस्तक भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं कला (लेख संग्रह) के विमोचन के दौरान कही। राज्य उपभोक्ता आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति अशोक कुमार ने कहा कि इस पुस्तक से भारतीय संस्कृति को समझने में सरलता होगी। प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं कला संकाय के पूर्व डीन प्रो. किरण कुमार थपल्याल ने बताया कि प्राचीन इतिहास के अध्ययन करने के लिए किस प्रकार प्राचीन भारतीय ब्राह्मी लिपि पढ़ी गई। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में लेखन कला संबंधी लेखों से हम अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं। डॉ. अरविन्द चतुर्वेदी ने कहा कि विद्यार्थियों को इस पुस्तक के अध्ययन से भारतीय संस्कृति और कला के सुदूर दक्षिण-पूर्व एशिया में विस्तार और उनके प्रभाव को समझने में सहायता मिलेगी। प्रो. कपूर ने बताया कि निष्पक्ष इतिहास लेखन वर्तमान एवं भावी पीढ़ी का मार्ग दर्शन करता है।

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

सार्क देशों के साथ शैक्षणिक संबंधों को बढ़ाएगा लविवि

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) के देशों के साथ मजबूत शैक्षणिक और अनुसंधान संबंधों को बढ़ावा देने की योजना बना रहा है। क्षेत्रीय सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने की दिशा में विवि ने सार्क सदस्य देशों के विश्वविद्यालयों और संस्थानों के साथ साझेदारी की एक श्रृंखला शुरू की है।

शुरुआत के लिए नेपाल में कई उच्च शिक्षा संस्थानों समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किए जा रहे हैं। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने कहा कि हमारे पड़ोसी देशों का समृद्ध ज्ञान और परंपराएं, आपसी सीखने और विकास के माहौल को बढ़ावा देती हैं। लविवि और सार्क देशों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों में शैक्षणिक और अनुसंधान विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जिसमें छात्र और संकाय विनिमय कार्यक्रम, ट्विनिंग, दोहरी और संयुक्त डिग्री, संयुक्त अनुसंधान पहल, संयुक्त सम्मेलन और सेमिनार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान शामिल है। (संवाद)

विवि में सोशल मीडिया प्रचार समिति गठित

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने शुक्रवार को विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर विश्वविद्यालय के प्रचार-प्रसार के लिए एक समिति का गठन कर दिया। यह समिति विश्वविद्यालय के फेसबुक पेज समेत यूट्यूब चैनल, एक्स व इंस्टाग्राम पेज को मैनेज करेगी। समिति में प्रो. अमृतांशु शुक्ला, डॉ. अल्का मिश्रा सहित आठ अन्य सदस्य शामिल हैं। कुलसचिव विनोद सिंह ने पत्र जारी करते हुए इसकी जानकारी दी। (संवाद)

लविवि से जुड़े कॉलेजों में अब नए दाखिले नहीं

विवि ने बंद किया प्रवेश से पहले होने वाले रजिस्ट्रेशन का पोर्टल

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय से सहयुक्त डिग्री कॉलेजों में मौजूदा सत्र में दाखिला देने की अंतिम तारीख शुक्रवार रात 12 बजे समाप्त हो गई। अब डिग्री कॉलेज भी अपने यहां कोई नया दाखिला नहीं ले सकेंगे।

लविवि की व्यवस्था के अनुसार इस साल से कॉलेज में दाखिले से पहले विवि के पोर्टल पर पंजीकरण कराना अनिवार्य किया गया है। इसके लिए 100 रुपये शुल्क भी तय किया गया है। लविवि से सहयुक्त डिग्री कॉलेजों में इस साल भले ही अभी सीटें खाली हों, पर वे दाखिले नहीं ले सकेंगे। लविवि ने लखनऊ यूनिवर्सिटी रजिस्ट्रेशन नंबर (लर्न) पोर्टल शुक्रवार रात 12 बजे बंद करने की घोषणा की है। इसकी सूचना भी कॉलेजों को भेज दी गई है।

लविवि ने अभी आधिकारिक रूप से लर्न पर पंजीकृत विद्यार्थियों का डाटा जारी नहीं किया गया है। लर्न की शुरुआत करने के पीछे असली मंशा विद्यार्थियों का डाटा लेना है।

1.75 लाख छात्रों ने कराया पंजीकरण

एलयूआरएन पोर्टल से लविवि ने एक करोड़ 75 लाख के आसपास की कमाई की। विवि ने मुख्य परिसर और सहयुक्त कॉलेजों में प्रवेश के लिए लर्न पोर्टल पर पंजीकरण अनिवार्य कर दिया था। बिना पंजीकरण अभ्यर्थी लविवि से जुड़े किसी भी संस्थान में दाखिला नहीं ले सकता है। जानकारी के मुताबिक लविवि के एलयूआरएन पोर्टल पर 1.75 लाख छात्रों के पंजीकरण कराया है। पंजीकरण शुल्क सौ रुपये निर्धारित था।

आईईटी में एक और केएनआईटी सुल्तानपुर में तीन सीटें खाली

लखनऊ। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय (एकेटीयू) से संबद्ध इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश के लिए चल रही काउंसिलिंग में दूसरे चरण का सीट अलॉटमेंट शुक्रवार को जारी कर दिया गया। प्रवेश को लेकर सरकारी संस्थानों में विद्यार्थियों की काफी रुचि दिख रही है। दूसरे चरण के आवंटन के बाद आईईटी में एक, केएनआईटी सुल्तानपुर में तीन और बीआईईटी झांसी में पांच सीटें ही खाली हैं। पुराने व नए राजकीय इंजीनियरिंग संस्थानों में भी काफी प्रवेश हुए हैं। दूसरे चरण में सरकारी कॉलेज में बीटेक की 4569 में से 3303 सीटें आवंटित हो गयी हैं। सीट पाने वाले अभ्यर्थी अपनी सीट फ्रीज या आगे बढ़ाने की प्रक्रिया 24 सितंबर तक करेंगे। प्रवेश समन्वयक प्रो. अरुण कुमार तिवारी ने बताया की सीयूईटी यूजी और पीजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए शुक्रवार को ऑनलाइन चॉइस फिलिंग हुई। इनका सीट एलॉटमेंट शनिवार को किया जाएगा। इसी तरह बीआर्क में 156 आवंटित सीटों के सापेक्ष 93 ने फीस जमा की है। इनकी प्रवेश प्रक्रिया 24 सितंबर तक पूरी की जाएगी, जबकि तीसरे चरण की प्रवेश प्रक्रिया 25 सितंबर से शुरू होगी। (माई सिटी रिपोर्टर)

विधि संकाय में हुआ ओरिएंटेशन कार्यक्रम

लखनऊ। लविवि के विधि संकाय में एडीआर ड्राफ्टिंग एवं लिटरेटी सोसाइटी की ओर से पहले सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें अधिष्ठाता संकाय प्रो. बीडी सिंह ने कहा कि छात्र सफल होने के लिए कोचिंग नहीं क्लास को माध्यम बनाएं। पाठ्यक्रम की पढ़ाई ऐसे करें कि कोचिंग की आवश्यकता न पड़े। उन्होंने मध्यस्थता के महत्व को बताते हुए कहा कि आने वाला समय वैकल्पिक विवाद निपटारे का है। न्यायालयों में लंबित वादों की संख्या को देखते हुए अब सफल वैकल्पिक विवाद निपटारे की ओर बढ़ना होगा। कार्यक्रम में प्रो. हरीश चंद्र राम, प्रो. मोहम्मद अहमद, डॉ. एके सोनकर व डॉ. अभिषेक तिवारी आदि मौजूद रहे। (संवाद)

भारतीय संस्कृति सरलता का प्रतिबिंब

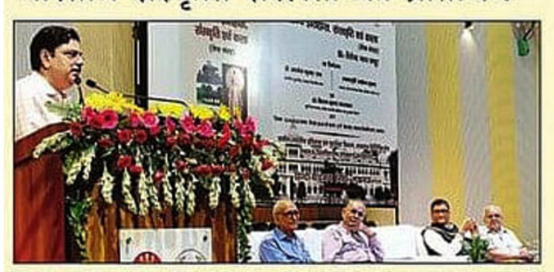

खगोल विज्ञान की उपयोगिता बताई

लखनऊ। लविवि के खगोल विज्ञान विभाग में शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय खगोल विज्ञान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में विभाग की शिक्षक डॉ. अलका मिश्रा ने कहा कि मानव जीवन में खगोल विज्ञान का अलग महत्व है। उन्होंने छात्रों को ब्रह्मांड के बारे में जिज्ञासा

साहित्य पर परिसंवाद आज

HINDUSTAN PAGE 12

एलयू का पोर्टल बंद, कॉलेजों में पांच हजार सीटें शेष बचीं

दाखिले की दौड़

- एलयू प्रशासन की ओर से पांच जिलों के कॉलेजों के लिए पंजीकरण अनिवार्य
- पंजीकरण कराने के बाद ही विद्यार्थी दाखिले के लिए कर सकता है आवेदन

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को एलयूआरएन पोर्टल बंद कर दिया है। इससे अब नए रजिस्ट्रेशन नहीं हो सकेंगे। इससे विश्वविद्यालय या कॉलेजों में प्रवेश लेने के इच्छुक छात्र-छात्राओं को कहीं दाखिला नहीं मिल सकेगा। वहीं पोर्टल बंद होने से करीब 5000 सीटें खाली रह गई हैं।

एलयू प्रशासन की ओर से सत्र 2023-24 से पांचों जिलों में किसी भी संबद्ध कॉलेज या विवि में प्रवेश के लिए लखनऊ विवि रजिस्ट्रेशन नंबर (एलयूआरएन) पंजीकरण अनिवार्य कर दिया है। इसके लिए छात्र-छात्राओं को 100 रुपये का शुल्क ऑनलाइन जमा कर और जरूरी जानकारियां भरकर पंजीकरण करवाना जरूरी है, जिसके बाद ही किसी कॉलेज या विवि में प्रवेश लिया जा सकता है। अब जब विवि प्रशासन ने एलयूआरएन पोर्टल बंद करने का आदेश जारी कर दिया है तो इससे कॉलेज में दाखिले नहीं ले सकेंगे। जिन कॉलेजों में अभी सीटें रिक्त हैं उनके लिए यह परेशानी है।

मांग: कम से कम 20 दिन के लिए खोलें पोर्टल

विद्यांत की प्राचार्या प्रो. धर्म कौर ने मांग की है कि एलयू प्रशासन को कम से कम 20 दिन के लिए पोर्टल खुला रखना चाहिए। जिससे कॉलेजों में भी एडमिशन हो जाएं। वहीं कालीचरण के प्राचार्य प्रो. चंद्रमोहन उपाध्याय ने कहा कि छात्र हित में कुछ दिन और पोर्टल खोल देना चाहिए।

केकेसी

प्राचार्य प्रो. विनोद चंद्रा ने बताया कि पीजी भौतिक, रसायन, अंग्रेजी व अर्थशास्त्र में लगभग 15-20 सीटें रिक्त हैं। एलयूआरएन पंजीकरण किए हुए अभ्यर्थी पहले आओ, पहले पाओ से दाखिला ले सकते हैं।

केकेवी

प्राचार्य प्रो. संजय मिश्रा का कहना है कि यूजी-पीजी पाठ्यक्रमों में 700 सीटें खाली हैं। इसमें बीए में 150, बीएससी बायो व मैथ्स में 200-200, बीकॉम की 150 और पीजी में कई विषयों में सीटें रिक्त हैं।

कालीचरण पीजी कॉलेज

प्राचार्य प्रो. चंद्रमोहन उपाध्याय ने कहा कि यूजी की सीटें फुल हो गई हैं। पीजी कार्यक्रमों में करीब 400 सीटें हैं। जिसमें 30 फीसदी सीटें खाली हैं।

विद्यांत हिंदू पीजी कॉलेज

प्राचार्या प्रो. धर्म कौर ने बताया कि बीए में 670 सीट के सापेक्ष 520, बीकॉम रेगुलर में 320 पर 40 और बीकॉम सेल्फ फाइनेंस की 120 सीटें खाली हैं।

670 सीटों में 520 सीटें विद्यांत कालेज में खाली

700 सीटें महिला कॉलेज में खाली रह जाएंगी

महिला, खुनखुनजी और एपी सेन में भी सीटें रिक्त

महिला कॉलेज में बीए की लगभग 700, बीएससी में 300 और बीकॉम की 20 सीटें खाली हैं। खुन खुन जी गर्ल्स में बीए की 485 सीट के सापेक्ष 280 और बीकॉम की 60 के सापेक्ष 47 सीटें खाली हैं। जबकि एपी सेन में बीकॉम की 50 और बीए में 200 से ज्यादा सीटें रिक्त हैं।

"एलयूआरएन पोर्टल शुक्रवार रात 12 बजे से बंद कर दिया गया है। इसका एक मात्र उद्देश्य छात्रों का डाटा उपलब्ध कराना था। जिससे कार्य सुचारू रूप से हो सकें।"

\- डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव, प्रवक्ता

सफाई के निर्देश दिए

लखनऊ। एलयू के द्वितीय परिसर में शुक्रवार को अधिष्ठाता छात्र कल्याण टीम ने कैंटीन व वाटर कूलर का निरीक्षण किया। अतिरिक्त डीएसडब्ल्यू डॉ. अभिषेक कुमार तिवारी ने निरीक्षण के बाद साफ सफाई रखने के निर्देश दिए।

भारतीय संस्कृति को समझाएगी किताब

लखनऊ। एलयू के एपी सेन सभागार में शुक्रवार को प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, एल्युमिनाई फाउण्डेशन व हिन्दी वाङ्मय निधि की ओर से पुस्तक विमोचन किया गया। यहां प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. शैलेन्द्र नाथ कपूर की पुस्तक भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं कला का विमोचन किया गया।

मानव जीवन में खगोल विज्ञान की अहम भूमिका

लखनऊ। एलयू के खगोल विज्ञान के छात्रों ने एनएसएस स्वयंसेवकों के साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय खगोल विज्ञान दिवस मनाया। यहां खगोलशास्त्री डॉ. अलका मिश्रा ने मानव जीवन में खगोल विज्ञान के महत्व के बारे में बात की। छात्रों को ब्रह्मांड के बारे में जिज्ञासा रखने के लिए प्रोत्साहित किया। पोस्टर मेकिंग और स्लोगन लेखन में अश्मिता सक्सेना ने प्रथम स्थान हासिल किया।

i-NEXT PAGE 4

नई सोशल मीडिया सेल तेज करेगी प्रचार

सार्क देशों से शैक्षिक संबंध बढ़ाएगा एलयू

JAGRAN CITY PAGE I & IV

'भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करता है निष्पक्ष इतिहास लेखन'

जासं, लखनऊ: निष्पक्ष इतिहास लेखन वर्तमान और भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करता है। भारतीय संस्कृति और कला के गौरव से परिचय कराने के लिए इतिहास लेखन अनिवार्य है। इसके माध्यम से ही अहम अतीत में हुई भूल से शिक्षा लेते हुए राष्ट्र को मजबूत बनाया जा सकता है। 'भारतीय इतिहास, संस्कृत एवं कला' पुस्तक के विमोचन पर यह बात इस पुस्तक के लेखक व लखनऊ विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व विभाग के पूर्व अध्यक्ष और प्रो. शैलेंद्र नाथ कपूर ने कही। समारोह लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास व पुरातत्व विभाग और एलुमिनाई फाउंडेशन व हिंदी वांग्मय निधि की ओर से विश्वविद्यालय के एपी सेन सभागार में हुआ।

लखनऊ विश्वविद्यालय में डा. शैलेंद्र नाथ कपूर की पुस्तक का विमोचन करते लवि कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय, साथ में उपस्थित राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति अशोक कुमार, प्रो. केके थपल्याल व राम किशोर बाजपेयी • जागरण

प्रो. कपूर ने बताया कि पुस्तक में उन्होंने अपने 39 साल के अध्ययन के दौरान के लेखन और शोध पत्र का संकलन किया है। 43 लेखों का संग्रह इतिहास के मूल स्रोत पर आधारित है। इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते उन्हें अपने देश के राजनीतिक, सांस्कृतिक और कला के वैभव को समझने का अवसर मिला। हिंदी में लिखे गए इन लेखों से इतिहास के विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा। विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. किरण कुमार थपल्याल ने कहा कि इतिहास को समग्रता से देखना और पढ़ना चाहिए। दुर्भाग्य से इतिहास में स्पेशलाइजेशन ज्यादा हो गया है। इस पुस्तक में जो भी लेखन है, उससे हम अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं। डा. अरविंद चतुर्वेदी ने कहा कि हिंदी वांग्मय निधि कम मूल्य में पुस्तकों का प्रकाशन कर रही है। इस पुस्तक के अध्ययन से भारतीय संस्कृति और कला के सुदूर दक्षिण-पूर्व एशिया में विस्तार और उनके प्रभाव को समझने में सहायता मिलेगी। राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष न्यायमूर्ति अशोक कुमार ने कहा कि पुस्तक पढ़ने वाले कम होते जा रहे हैं, जो हैं वह सही पुस्तकों की मांग कर रहे हैं। अच्छी पुस्तकों का प्रचार-प्रसार होना चाहिए। कुलपति प्रो. आलोक राय ने विद्यार्थियों से कहा कि इतिहास में खोजने, जानने और मानने की प्रवृत्ति से विद्वान बन सकते हैं। संचालन प्रो. पीयूष भार्गव ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अरूप चक्रवर्ती ने किया। हिंदी वांग्मय निधि से राम किशोर बाजपेयी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी अरविंद चतुर्वेदी, पूर्व व वर्तमान शिक्षक, विद्यार्थी, साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

लवि की नई सोशल मीडिया सेल तेज करेगी प्रचार

लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय ने विभिन्न इंटरनेट माध्यमों पर अपने प्रचार-प्रसार के लिए सोशल मीडिया सेल को और मजबूत बनाया है। इसके लिए कुलपति ने सोशल मीडिया सेल गठित कर दिया है। यह सेल फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे इंटरनेट माध्यमों पर लखनऊ विश्वविद्यालय पेज पर पोस्ट किए गए प्रचार और सामग्री को देखेंगे। (जासं)

'सफलता के लिए कोचिंग नहीं कक्षा को माध्यम बनाएं'

जागरण संवाददाता, लखनऊ: सफल होने के लिए कोचिंग नहीं कक्षा को माध्यम बनाएं। कक्षा में भी विधि के हर आयाम में सब कुछ सीखा जा सकता है। विद्यार्थियों को प्रयास करना चाहिए कि विधि की पढ़ाई इस प्रकार करें कि बाद में कोचिंग की आवश्यकता न पड़े। लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि संकाय में आयोजित कार्यक्रम में यह बात विधि संकाय के अधिष्ठाता डा. बंशीधर सिंह ने कही। यह कार्यक्रम विधि प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित किया गया।

उन्होंने मध्यस्थता के महत्व को विस्तार से बताते हुए कहा कि आने वाला समय वैकल्पिक विवाद निपटारे का है। न्यायालयों में लंबित वादों की संख्या को देखते हुए अब सफल वैकल्पिक विवाद निपटारे की ओर बढ़ना होगा। अन्य वक्ताओं ने विधि के छात्रों को ड्राफ्टिंग की कला सीखने के लिए कहा। बिना ड्राफ्टिंग के विधि का अध्ययन अधूरा है। स्टूडेंट डीन इंद्र दमन तिवारी ने संकाय की उपलब्धियां बताते हुए संकाय के यूट्यूब चैनल और ट्विटर हैंडल की चर्चा की। कार्यक्रम में एडीआर ड्राफ्टिंग व लिटरेरी सोसाइटी के अध्यक्ष आरजू नायाब, अंकित राय ने सोसाइटी के कार्यक्रमों को बताया।

सार्क देशों से शैक्षिक संबंध बढ़ाएगा लवि

जासं, लखनऊ: दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) से जुड़े देशों से अब लखनऊ विश्वविद्यालय (लवि) शैक्षणिक संबंध बढ़ाएगा। सार्क क्षेत्र विविध संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं से जुड़ा है, जो इसे अकादमिक शोध और अंतर-सांस्कृतिक समझ के लिए उपजाऊ भूमि बनाता है। लवि ने सार्क देशों से बातचीत भी शुरू कर दी है। जल्द ही नेपाल में कई उच्च शिक्षा संस्थानों और विश्वविद्यालयों के साथ कई समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। भूटान और बांग्लादेश के कई विश्वविद्यालयों से भी सकारात्मक बात हो चुकी है। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि हमारे पड़ोसी देशों का समृद्ध ज्ञान और परंपराएं सीखने और विकास के माहौल को बढ़ावा देती हैं। अपने निकटतम पड़ोसियों तक पहुंचने और सहयोगी उद्यमों में उनके साथ हाथ मिलाने से बेहतर शुरुआत क्या हो सकती है। इस पहल से छात्र और संकाय विनिमय कार्यक्रम, संयुक्त डिग्री, संयुक्त अनुसंधान, संयुक्त सम्मेलन और सेमिनार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान किए जाएंगे। सार्क देशों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित किया जाएगा। इसमें प्रदर्शनी, त्योहार, सांस्कृतिक प्रदर्शन भी शामिल होंगे।

लखनऊ विश्वविद्यालय में कौशल विकास की कक्षाएं शुरू

जासं, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक मंच की कौशल विकास के लिए कक्षाएं शुरू की गई हैं। इसमें छात्र-छात्राएं गायन और नृत्य (भारतीय और पश्चिमी दोनों), लोक, आर्केस्ट्रा, वाद-विवाद दक्षता, थिएटर या अपनी पसंद की कोई अन्य कला सीख सकते हैं।

PIONEER PAGE 3

भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं कला पुस्तक का विमोचन

सार्क देशों के साथ शैक्षिक संबंध प्रगाढ़ करने की तैयारी में लविवि

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मनाया गया अंतरराष्ट्रीय खगोल विज्ञान दिवस

THE PIONEER PAGE 2

Lucknow University to foster ties with SAARC nations

PNS ■ LUCKNOW

As a part of its commitment to providing students an international experience, the University of Lucknow is planning to foster stronger academic and research ties with South Asian Association for Regional Cooperation (SAARC) nations.

In a significant move towards promoting regional cooperation and knowledge exchange, the university is embarking on a path of collaboration that is set to benefit students, faculty, and researchers alike.

"The SAARC region is home to diverse cultures, languages, and traditions, making it a fertile ground for academic exploration and cross-cultural understanding. Recognising the immense potential for growth and development in this region, the University of Lucknow has initiated a series of collaborations and partnerships with universities and institutions from SAARC member countries," said a LU spokeperson.

"The University of Lucknow has already initiated, and in many cases formalised, talks with many SAARC nations. To begin with, multiple MoUs are being signed with higher education institutions and universities in Nepal, most likely in September itself. The university has already reached out to universities in Bhutan and Bangladesh and received affirmative responses," he said.

Prof. Alok Kumar Rai, Vice-Chancellor of University of Lucknow, expressed his enthusiasm about these developments, saying, "Our university has always been committed to providing a global perspective to our students and faculty.

Collaborating with SAARC nations allows us to tap into the rich knowledge and traditions of our neighbouring countries, fostering an environment of mutual learning and growth. Also, what better way to start than reach out to our immediate neighbours and join hands with them in collaborative ventures."

The collaborative efforts between Lucknow University and SAARC nations encompass a wide array of academic and research disciplines, including but not limited to student and faculty exchange programs, twinning, dual and joint degrees, joint research initiatives, joint conferences and seminars, cultural exchange programs.

"The joint academic and research collaborations will provide scientists a greater research sample and exposure to different environments and populations, increasing the applicability of research findings. In addition to academic collaborations, the University of Lucknow will promote cultural exchange programs that showcase the rich cultural heritage of SAARC nations. This will include exhibitions, festivals, and cultural performances that celebrate the diversity of the region" said the spokeperson.

"The University of Lucknow has already taken concrete steps to implement these collaborations. Several Memoranda of Understanding (MoUs) are ready to be signed with universities in SAARC nations, laying the foundation for fruitful partnerships. These initiatives are expected to create a dynamic academic environment that fosters innovation, cross-cultural understanding, and intellectual growth.

As these partnerships continue to evolve, the University of Lucknow remains committed to its mission of advancing education, research, and global cooperation" he added.

TOI PAGE 4

LU team excels at moot court contest

Law students of Lucknow University clinched the second position in the 4th National Moot Court competition hosted by Kalinga University, Raipur . LU team comprising Sakshi Pandey (LLB Hons III), Akash Chaudhary (LLB Hons III) and Kaushiki Sharma (LLB Hons II) also received Rs 15,000 cash prize. Sakshi Pandey's exceptional oratory skills also earned her the title of Best Speaker. Head and dean of law faculty, Prof BD Singh, Radheshyam Prasad, and all law faculty members congratulated the team.

LOKSATYA PAGE 3

वर्तमान व भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करता है निष्पक्ष लेखन

SWATANTRA BHARAT PAGE 2

निष्पक्ष इतिहास लेखन भावी पीढ़ी का मार्ग दर्शन करता है: प्रो.कपूर

स्वतंत्र भारत संवाददाता, लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के एपी सेन सभागार में कुलपति प्रो.आलोक कुमार राय, न्यायमूर्ति अशोक कुमार तथा प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं कला संकाय के पूर्व डीन प्रो.किरण कुमार थपल्याल, हिन्दी सेवी राम किशोर बाजपेयी ने प्रो.शैलेन्द्र नाथ कपूर द्वारा लिखित पुस्तक भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं कला (लेख संग्रह)का विमोचन किया। इस अवसर पर प्रो.आलोक कुमार राय ने पुस्तक की उपयोगिता एवं वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने छात्रों से यह भी कहा कि किसी भी पुस्तक को पढ़कर उसका परीक्षण करिए फिर तथ्यों पर विश्वास कीजिए। इससे ही आप भी विद्वान बन सकते हैं। न्यायमूर्ति अशोक कुमार ने इस पुस्तक द्वारा भारतीय संस्कृति को समझने में सरलता की बात कही। प्रो.थपल्याल ने बताया कि प्राचीन इतिहास के अवगाहन करने के लिए किस प्रकार प्राचीन भारतीय ब्राह्मी लिपि पढ़ी गई। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में लेखन कला सम्बन्धी लेखों से हम अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं। डॉ.अरविन्द चतुर्वेदी ने हिन्दी वाङ्मय निधि की सेवा भावना को व्यक्त करते हुए कम मूल्य में प्रेरणाप्रद पुस्तकों के प्रकाशन तथा इस पुस्तक में संस्कृति और कला विषयों के लेखों की प्रतियोगी परीक्षाओं में उपयोगिता की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि उन्हें इस पुस्तक के अध्ययन से भारतीय संस्कृति और कला के सुदूर दक्षिण-पूर्व एशिया में विस्तार और उनके प्रभाव को समझने में सहायता मिलेगी।

VOICE OF LUCKNOW PAGE 6

लविवि सार्क देशों के साथ शैक्षिक संबंध प्रगाढ़ करने की तैयारी में

वरिष्ठ संवाददाता

- सार्क देशों के विश्वविद्यालयों के साथ कई एमओयू पर हस्ताक्षर किये जाने की तैयारी

भारतीय संस्कृति को समझने में सहायक होगी पुस्तक

वरिष्ठ संवाददाता

- लविवि में भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं कला पुस्तक का हुआ विमोचन

लविवि के द्वितीय परिसर के समस्त कैंटीन एवं वाटर कूलर का किया निरीक्षण

आने वाला युग एडीआर का: प्रो. बंशीधर सिंह